वर्ष 42 अंक : 4 26.07.2019 शुक्रवार (जुलाई - अगस्त) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

भगवत् कृपा

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

13 मई 2019 –अनुष्ठान शिविर शुभारंभ

गुरुपूर्णिमा एवं रक्षाबंधन...

गुरु की महिमा और आवश्यकता सभी संप्रदायों एवं सभी देशों में अलग-अलग रूप में स्वीकारी जाती है। परंतु, गुरु की यथार्थ महिमा समझ कर, भक्तिपूर्ण हृदय से गुरुपूजन करके पर्व को विशिष्ट स्थान तो भारतीय संस्कृति ने दिया है। जिन्होंने प्रभु को अखंड रखा है ऐसे **सद्‌गुरु** – ऐसी **सच्ची गुणातीत विभूति का पूजन करना तो साक्षात् प्रभु श्रीजी महाराज का पूजन करने के समान है और वही सच्चा 'गुरुपूजन' है।** क्योंकि **सद्‌गुरु** यानि–

- प्रत्येक प्रश्न का समाधान है।
- प्रत्येक कठिनाई की युक्ति है।
- व्यावहारिक एवं आत्मिक उन्नति का स्रोत है।
- संपूर्ण ज्ञान का भंडार है।
- पथप्रदर्शक - मार्गदर्शक है।
- एक अद्‌भुत अहसास है, जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते।
- भाव, श्रद्धा और समर्पण की सीख है।
- कोई व्यक्ति-शरीर नहीं, बल्कि एक तत्त्व -एक शक्ति है।
- आश्रित को जीवन के अंतिम लक्ष्य पर पहुँचाने वाला सच्चा हितैषी है।
- आश्रितों को जीवन जीने की कला सिखा कर, उन्हें सच्चे अर्थ में प्रभुपरायण बनाता है।

दरअसल, गुरुपूजन में भक्तिभाव कहो या समर्पण समाविष्ट है, जो एहसास कराता है – 'इनका हाथ सदैव मेरे सिर पर है।' सभी गुणातीत स्वरूप भी दोहराते हैं कि **हम एक ही कॉन्सशियसनेस में रहें कि मेरा नाम किससे जुड़ा है।** तो, हम पल-पल जाग्रत रहेंगे कि क्या करने आए हैं और क्या कर रहे हैं ? **गुरुहरि काकाजी** तो अकसर कहते – *'मैं किसकी घरवाली हूँ...'*

16 जुलाई – गुरुपूर्णिमा एवं **15 अगस्त – रक्षाबंधन** के परम पवित्र पर्व पर **'सद्‌गुरु कॉन्सशियसनेस'** में रहने का संकल्प करें एवं चैतन्य की शाश्वत् रक्षा प्राप्त करने हेतु निम्न आशीर्वचन से लाभान्वित हों...

प्रगट स्वरूप को तत्त्व से पहचाने हुए परम एकांतिक के समागम से भगवान और संत की वे जैसे हैं, वैसी यथार्थ पहचान हुई। तो, अब तक का पुराना हिसाब चुका देना ! हमें अपने जीवन का तीन तरफ़ा हिसाब चुकाना होता है।

एक – बूंदसृष्टि से उत्पन्न हुई देह के सगे-संबंधियों या मित्रमंडल के साथ के सभी रिश्ते ज्ञान से विस्मृत कर दें और त्यागी हों तो उनसे बिलकुल फ़ारिग़ होकर, केवल गुरुमुखी बन कर, बड़े संत की आज्ञा के अनुसार जीवन जीना शुरू कर दें। इससे आगे जाकर, मन के संकल्प, मनमुखी क्रियाओं को बिलकुल छोड़ दें। इस हेतु **परम एकांतिक संत जब हमारी मान्यताओं व ग्रंथियों को दूर करायें, तब समझदारी से उसे गुरुकृपा-प्रताप मान कर प्रार्थना करें। तो, ये ग्रंथियाँ आसानी से निकल जाती हैं।**

जीव में जड़मूल से निहित अव्यक्त राग सिद्ध पुरुषों को अपनी स्थिति में से भी डिगा देते हैं, मन को ऐश्वर्य-प्रताप से बांधे रखते हैं; भगवान की मूर्ति भुलवा कर भगवान और भक्तों के प्रति के भाव में फ़र्क़ ला देते हैं।

पर, **बड़े संत के वचन से अतिशय सेवा करने पर और भक्तिरूप क्रिया की आदत डाल देने पर जड़ प्रकृति के ऐसे स्वभाव निर्मूल हो जाते हैं।** सो, जिसके स्वभाव निर्मूल हुए हों, उसके साथ सच्चे दिल से जुड़ कर, निष्कपटभाव से वर्तना ही पड़ता है और प्रगट संत की स्मृति करके, जाग्रतता से भजन की भी ऐसी ही आदत डाल दें। साथ ही साथ, संबंध वाले मुक्तों के साथ वचनामृत गढडा प्रथम 16 का विवेक रख कर, अनुभवज्ञान से क्रियाएँ करनी पड़ें। तो, गुरुकृपा और दृष्टि से जड़ प्रकृति के ऐसे स्वभाव भी सहज निर्मूल हो जाते हैं।

तो, अब आसानी से अक्षरधाम का सुख ले सकें, इस हेतु प्रकृति-पुरुष के ऐसे पैबन्दों और लेन-देन चुका कर केवल आत्मा और **परमात्मा, स्वरूप और उनके संबंध वाले मुक्तों के साथ आध्यात्मिक संबंध दृढ़ करें और वे राज़ी हों ऐसा और उतना ही कदम उठाएँ। तो जीतेजी ही सुख, शांति और आनंद के फुव्वारे अवश्य छूटेंगे।**

सो, अपने इस निशान में से हम डिगे नहीं, आत्मा का स्वधर्म छोड़ें नहीं और अल्प संबंध वाले जीव का भी हमें अभाव आए नहीं तथा निर्मानीभाव से उल्लासपूर्वक सत्संग की सेवा करते हो जाएँ, ऐसी **'ज्ञानसमाधि'** सहज प्राप्त हो यही अभ्यर्थना।

– प.पू. गुरुजी द्वारा गुरुहरि काकाजी महाराज की कथावार्ता से संकलित

❖❖❖

गुरुहरि पप्पाजी की जयंती...

1 सितंबर... गुरुहरि पप्पाजी का प्राकट्य पर्व ! सामान्यतः जगत में बालक अपने पिता को **'पप्पा'** या **'पापा'** कह कर पुकारता है। उसमें एक अपनापन समाया है। यह एक शब्द बच्चे को एहसास कराता है कि उसके रक्षण में उसका अपना कोई बैठा है और उसके बलबूते पर वह सब कुछ हासिल कर सकता है या कैसी भी परिस्थिति का सामना कर सकता है। जगत में एक बालक को जब पिता के अस्तित्व से इतनी हूँफ मिलती है, तो हमारा कैसा अहोभाग्य कि गुणातीत विभूतियों के रूप में ऐसे समर्थ सारथी हमें मिले हैं। सर्व प्रकार से वे हमारी परवरिश-रक्षा में तत्पर हैं।

ऐसे ही शाश्वत् स्वरूप गुरुहरि पप्पाजी का हम सबको न केवल जोग हुआ, बल्कि अपने आश्रय में लेकर उन्होंने हमारी पल-पल की जिम्मेदारी स्वयं उठा ली। श्वेत वस्त्रधारी, शीतल, शांत, सौम्य, धीर-गंभीर और सरल दिखते गुरुहरि पप्पाजी अपने जीवन का पल-पल केवल गुरुहरि योगीजी महाराज का प्रकाश बन कर, उन्हें पूर्ण समर्पित होकर ही जिए। इसलिए प.पू. बापा के संकल्प-अभिप्राय में स्वयं को याहोम करते हुए, आश्रितों को संबंधरूपी अमृत का रसपान कराते हुए उन्होंने जीवनमंत्र दिया–

'सामने आए मुक्त को ब्रह्म की मूर्ति मानो...'

'निर्दोष बनने के लिए संबंध वाले मुक्तों को निर्दोष मानो...'

केवल उपदेश, आज्ञा या नियमों में जकड़े रखने के बजाय, आंतरिक रूपांतर कराते हुए हँसते-खेलते गुणातीत स्थिति प्राप्त करने के मार्ग पर सहजता से उन्होंने हमें अग्रसर किया। जब तक टोटल प्रभु का होकर जीते न हो जाएँ, एक दिव्य माँ की भाँति अब भी वे हमारा जतन कर रहे हैं।

कोटि धन्यवाद हैं श्रीजी महाराज को कि जिन्होंने ऐसे गुणातीत स्वरूपों की सौगात देकर मानो संपूर्ण मानवजाति

को सनाथ किया है। हमें इनका संबंध हुआ, वही प्राप्ति और वही पूर्णाहुति है! तो, ऐसी अनुपम शाश्वत् प्राप्ति का क़ैफ हर क्षण रखते हुए, सभी में आध्यात्मिक समतायुक्त निर्दोषबुद्धि रख कर, प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों का अंतर से सेवन करें... उनकी जीवनभावना के अनुरूप हमारे इंद्रिय एवं अंतःकरण को ढालने के लिए तत्पर हों यही गुरुहरि पप्पाजी के प्राकट्य पर्व पर उनके श्रीचरणों में प्रार्थना!

हमें प्रकृति पुरुष से परे के सर्वोपरि पुरुषोत्तमनारायण के भव्य स्वरूप मिले। उन्होंने ही हम जैसे अधम, पापी, राजसी, तामसी, सात्त्विक, त्यागी – सभी के अपने-अपने ही प्रारब्ध का उपयोग करके हमें भगवान के मार्ग पर अग्रसर किया। हम सभी में संप, सुहृद्‌भाव एवं एकता की भावना जगाई, माहात्म्य उदित किया और एक-दूजे को महिमा की दृष्टि से देखता किया।

यह किस प्रकार बना ? तो, केवल कृपा से! बस, इतना ही विचार करें तो पागल हो जाएँ कि इतनी अधिक कृपा!! ये भगवान केवल कृपासाध्य हैं और सिर्फ संबंध से कल्याण करें ऐसे सर्वोपरि हैं।

अब बड़े सद्‌गुरु निखालसभाव से हमें जो बात करते हैं कि वे स्वयं कैसे थे और कैसे बन गए, कैसे-कैसे संजोगों में से गुज़रे हैं – इसमें से एक ही निष्कर्ष निकलता होगा कि भगवान की दृष्टि में आने के बाद सभी संजोग उन्होंने बनाए हैं। किसी के द्वारा सेवा करवाई, किसी से चिंतन कराया, व्यापार करवाया इत्यादि... प्रत्येक के प्रारब्ध इस्तेमाल किए और हमारे लहू के कतरे-कतरे में से अहंकार निकाल कर देह में भगवान बिठा दिए।

ये भगवान **'केवल'** कृपासाध्य हैं। इस 'केवल' शब्द में खूब मर्म निहित है। हम किसी भी प्रकार का स्वप्रयत्न न करें, वह भी भगवान के ऊपर एहसान किया कहा जाए... हमें लगे कि ऐसा करें – वो हमारे मान का पोषण तो नहीं हो रहा ? परंतु प्रार्थना करें कि हे भगवान! तू केवल दयालु है, मुझ पर कृपा करना। अधम, पापी, नीच, रजोगुणी, तमोगुणी, सत्वगुणी, पशु-पक्षी, जीव-जंतु सभी पर कृपा करना।

'अति समर्थ मिले हैं' – ऐसा जो मानता है वह यही किया करता है। **अखंड माहात्म्य में जीएँ, तो हमारा वर्तन बातें करेगा। भगवान के भव्य स्वरूप ने सभी को कृपा में ग्रहण किया है और सभी की पूर्णाहुति वे कराएँगे –** इतनी दृढ़ता रखना। सभी के प्रारब्ध का इस्तेमाल करके सभी में यह समझ वे प्रकटाते हैं; तभी वैसे वर्तने का मन होता है। परंतु, जीव मानता है कि सब कुछ मैं करता हूँ और वर्ताने वाले को तो नज़रअंदाज़ कर देता है। जीव तो सेंका हुआ पापड़ तक तोड़ नहीं सकता, फिर भी उसे ऐसा होता है, मानो मैंने तो हिमालय लाँघ लिया... परंतु, यह **सब कराने वाले तो 'साक्षात् प्रभु' स्वयं ही हैं।**

यदि इस प्रकार मानेंगे, तो अंतर्दृष्टि की आड़ में भी हम हमारी या अन्य की अमहिमा का विचार नहीं कर पाएँगे। ऐसे दोष के बारे में भी विचार नहीं करना कि यह संकल्प क्यों उठा ? उलझन आए, विक्षोभ हो या अभाव का संकल्प उठे, तो तुरंत ही मन से सावधान हो जाना और केवल उन्हें – सत्पुरुष को ही याद करके जपयज्ञ करने लग पड़ना। हे स्वामी! हे महाराज! मुझे यह चाहिए ही नहीं। यूँ, निश्चयात्मक गाँठ बाँध कर भजन करने लगना।

सभी रोगों का यह इलाज हाथ में आ गया है। इससे प्राप्ति का क़ैफ आ जाएगा कि 'ओहोहो! ऐसे सर्वोपरि मिले हैं! एक आज्ञा देकर हमारा कल्याण कर देंगे!!' तब तक भजन करना।

सभी को ऐसा बल दे दें यही पू. बापा से प्रार्थना।

– प.पू. पप्पाजी की ज्ञानगोष्ठि में से उद्‌धृत, 1977

‘अनुष्ठान शिविर’ – 2019

प्रति वर्ष की भाँति मई महीने में होते ‘अनुष्ठान शिविर’ के निकट आते ही दिल्ली मंदिर से जुड़े संतों, युवकों, बहनों एवं हरिभक्तों के हृदय में एक स्फूर्ति उत्पन्न होने लगती है। क्योंकि – इस वार्षिक ‘रिफ्रेशर्स कोर्स’ से सभी की आत्मिक बैटरी तो चार्ज होती ही है, साथ ही दिव्य गुणातीत कुनबे के मुक्त एक माह तक लगातार एक-दूजे से रोज़ मिलने का मौका पाते हैं। अबकी बार, परमहंसों द्वारा संकलित **भगवान स्वामिनारायण** के उपदेशों का ग्रंथ **‘वचनामृत’** की द्विशताब्दी का वर्ष होने के कारण यह शिविर अनोखी थी। मंदिर के संतों एवं सेवकों ने **‘कल्पवृक्ष’** हॉल में गढडा में स्थित दादाखाचर के दरबार की **‘अक्षर ओरड़ी’** का दृश्य बनाया था, जिसमें भगवान स्वामिनारायण सहित वचनामृत की रचना करने वाले सद्गुरुओं की मूर्ति लगाई थी। साथ ही, भगवान स्वामिनारायण के प्रासादिक पोशाकों एवं पत्रों को भी दर्शन हेतु लगाया था। इसके अतिरिक्त, **संतभगवंत साहेबजी** ने प.पू. गुरुजी को भगवान स्वामिनारायण द्वारा स्वयं रचित एवं लिखित **‘शिक्षापत्री’** की प्रति जो भेंट दी थी, उसे भी प.पू. गुरुजी ने दर्शन हेतु रखवाया था। इसी के पास व्यासपीठ बनाया गया था, जिस पर बैठ कर सेवक **पू. आनंद** को **प.पू. गुरुजी** द्वारा चयन किए गए मुख्य वचनामृतों का पठन करना था।

13 मई-सोमवार, 2019 का शुभ दिन आया कि सायं 7:00 बजे धुन के पश्चात् **पू. मल्कानी अंकल, पू. ओ.पी. अग्रवालजी** एवं **पू. भद्रायुभाई जानी** ने ‘अनुष्ठान शिविर’ का दीप प्रज्ज्वलित करके उद्घाटन किया। **पू. सुहृदस्वामी** एवं **पू. समीरभाई दवे** द्वारा किये महिमागान के बाद **पू. आनंद** व्यासपीठ पर विराजित हुआ और ‘अनुष्ठान शिविर’ एवं वचनामृत का माहात्म्य समझाते हुए **प.पू. गुरुजी** ने कहा –

...‘अनुष्ठान शिविर!’ यह ‘अनुष्ठान’ शब्द काकाजी ने दिया है। काकाजी कहते थे – किसी का कोई भी काम रुका हुआ हो, कुछ बिगड़ा हुआ हो, कुछ बनता नहीं हो, तो ‘अनुष्ठान’ करो। उसी में से ‘अनुष्ठान शिविर’ की शुरुआत हुई। ‘अनुष्ठान’ मिनिमम बीस मिनिट के भजन से होता है। पहले काकाजी ने बताया था – बारह मिनिट। फिर उन्होंने कहा – चार मिनिट ग्रेस के और चार मिनिट माईन्ड स्टेबल हो, इधर-उधर से एकाग्र हो, इसलिए आप लोग बीस मिनिट धुन करना। तब से ये (धुन) शुरु हुई और इस शिविर का नाम भी रखा गया – ‘अनुष्ठान शिविर!’ सो, जिसे अपना कोई रुका हुआ काम बना देना हो; वह इस शिविर में समय पर अचूक हाज़िर रहे, एक भी दिन नागा किए बिना...

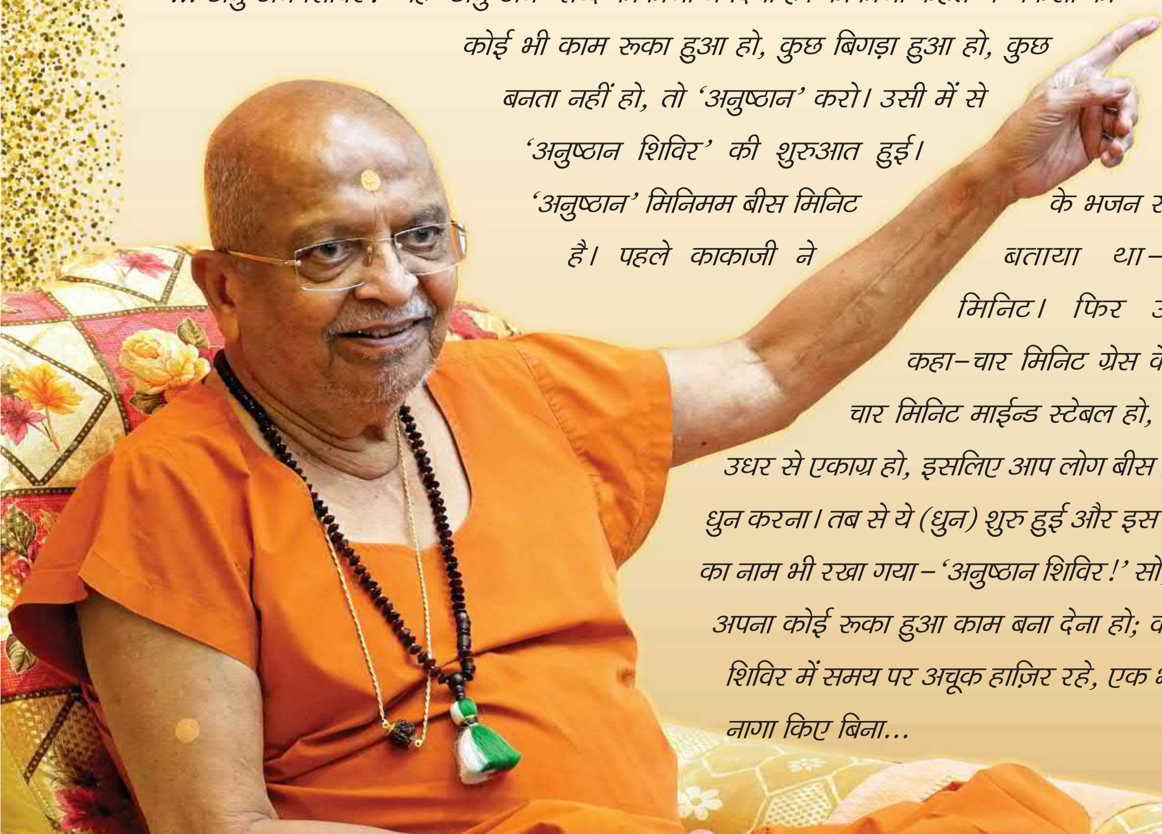

'अक्षर ओरड़ी' की डॅकोरेशन देख कर मैं तो खुश हो गया! इसमें बैठ कर महाराज ने शुकमुनि द्वारा वचनामृत एवं सत्संगीजीवन रचित करवाया था। हुबहु अक्षर ओरड़ी के पास बैठने का हम सबको मौका मिला। इस शिविर में की गई मन्नत के फलस्वरूप हम सब 'अक्षररूप' हो जाएँ। 'अक्षररूप' क्या कि हम में महाराज ही निवास करके रहें। महाराज भीतर तो हैं ही, लेकिन उनके प्रगटीकरण का निरंतर अनुसंधान रहे कि भीतर में महाराज विराजमान हैं। इससे हम में निर्भयता, निश्चिंतता रहेगी और हमारा माईन्ड कुछ गलत करने का सोच भी नहीं सकेगा। ऐसा महाराज कर दें यही आज के दिन प्रार्थना। ये 'अक्षर ओरड़ी' भी हमें ऐसी स्मृति दृढ़ करा दे कि रोज़ शाम को गढडा जाना है।

यूँ, अनुष्ठान शिविर की मंगल शुरुआत हुई। 12 जून तक रोज़ सायं ठीक 7:00 बजे धुन शुरू होती। तत्पश्चात् **पू. राकेशभाई, पू. डॉ. दिव्यांग** एवं **पू. विश्वास** हिन्दी एवं गुजराती भजन प्रस्तुत करते। प्रति दिन दो मुक्त अपने स्वानुभवों से सबको लाभान्वित करते। प.पू. गुरुजी की इच्छानुसार मुंबई-पवई से **प.पू. वशीभाई** एवं **पू. अश्विनभाई 1 से 3 जून** अपने दर्शन एवं समागम का लाभ देने के लिए दिल्ली मंदिर आए। डॅकोरेशन का दर्शन करके **प.पू. वशीभाई ने भी कहा –**

'गढडा' जाए बिना हूबहू 'अक्षर ओरड़ी' का दर्शन हो गया!

प.पू. वशीभाई ने वचनामृत के विषय में बहुत ही विस्तारपूर्वक जानकारी दी कि किस प्रकार उसका अध्ययन करना चाहिए, कब व किस प्रकार वह लिखा गया, उसकी भाषा क्या है और... प.पू. गुरुजी की आज्ञा से भगवा कुर्ता-पजामा, टोपी इत्यादि धारण करके व्यासपीठ पर बैठ कर, **वचनामृत गढडा प्रथम 54** – 'संत मोक्ष का द्वार है' का निरूपण करके उसका मर्म समझाया। अबकी बार प.पू. गुरुजी ने तो शिविर में किसी-किसी दिन ही वचनामृत का निरूपण किया, परंतु प्रगट के उपासकों के स्वानुभवों द्वारा सभी को प्रगट स्वरूप को निहारने और पहचानने की निराली सूझ ज़रूर मिली।

12 जून की सायं **गुरुहरि काकाजी महाराज** के **101वें प्राकट्य दिन** पर शिविर की पूर्णाहुति हुई। इस दिन 'अक्षर ओरड़ी' में प.पू. गुरुजी के सोफे के ठीक ऊपर, गुरुहरि काकाजी की पी.ओ.पी. की लाईफ साईज़ मूर्ति के साथ-साथ उनकी अलग-अलग मूर्तियों का दर्शन हो रहा था। **पू. अभिषेक, पू. पुनीत गोयलजी** एवं **प.पू. गुरुजी के प्यारे पू. नक्षत्र** ने मार्मिक रीति से अपने अनुभवों का लाभ दिया और... अंत में **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** ने माणावदर मंदिर के पाटोत्सव निमित्त गुरुहरि काकाजी के प्रति अपनी जो भावनाएँ प्रकट की थीं, उसी ऑडियो का श्रवण एवं निरूपण करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने रहस्य की निम्न बातें की –

...मैं कई बार कहता हूँ कि सभी में से बातें तो एक सरीखी ही आती हैं, पर साहेब वगैरह का पूरा ग्रुप हाईली एज्युकेटेड है। पप्पाजी भी मुझे कहते थे – देखो हमारे जसभाई साहेब, शांतिभाई, रतिभाई, हर्षदभाई, अश्विन डबल ग्रेज्युएट हैं, रिसर्च स्टुडंट्स हैं; इनकी बात हरेक को कन्वीन्स करती है। तब मैं ऐसा समझता था कि मुझे चिढ़ाने के लिए पप्पाजी ये कहते हैं। लेकिन, आज लगता है कि पप्पाजी की बात 150 परसेंट सही

है। साहेब की बातें सुन कर आपको भी लगा ही होगा कि ये बातें गुरुजी भी करते ही हैं, पर जिस तरीके से साहेबजी ने समझाई, वो तुरंत गले उतर गई!

*मैं हमेशा कहता हूँ कि राधा-कृष्ण, सीता-राम, शिव-शक्ति ये जैसे **'युगल उपासना'** है, इसी तरह **स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज** ने अक्षर और पुरुषोत्तम की 'युगल उपासना' प्रस्थापित की है। मानो अक्षर सहित पुरुषोत्तम, स्वामी के साथ नारायण, ब्रह्म के साथ परब्रह्म की 'युगल उपासना!' वो फैलाने के लिए-प्रवर्तन करने के लिए बॅप्स के मंदिरों का निर्माण किया, हालाँकि इन्हें अलग नहीं करना था। लेकिन, वड़ताल में रह कर वह संभव नहीं था, क्योंकि वहाँ तो सिर्फ 'महाराज' – उसके बाद इनका 'प्रगट स्वरूप' कोई नहीं। संत अच्छे हैं, साधु अच्छे हैं, सारे गुणों से सिद्ध हैं, लेकिन गुणातीत परंपरा के संतों को जैसे हम मानते हैं कि वे महाराज को अखंड रखे हुए हैं, यूँ वे नहीं मानते हैं। इसलिए शास्त्रीजी महाराज ने बॅप्स के मंदिरों की स्थापना करी। **पू. कृष्णजी अदा** ने कहा था – तुम जाओ और बातें करो, तभी गुणातीतानंदस्वामी के प्रगटीकरण का मर्म लोगों की समझ में आएगा। बहुत मुश्किल बात थी तब। उनके पास किसी को जाने भी नहीं देते थे।*

*यूँ शास्त्रीजी महाराज ने बॅप्स की संस्था का स्थापन करके अक्षरपुरुषोत्तम की जो निष्ठा प्रवर्ताई, जो वड़ताल में रहकर ज़ोर-शोर से व्यापक रूप में नहीं कर सकते थे। बहुत कम लोग इसका लाभ उठा सकते थे। **शास्त्रीजी महाराज को कोई बड़प्पन नहीं लेना था। अक्षरपुरुषोत्तम की निष्ठा पकड़ कर-जीव में दृढ़ करके आज भी हम सर्वथा सुखी हों, इसलिए उन्होंने किया है।***

ठीक इसी तरह** बॅप्स से निकल कर **काकाजी** ने एक नया अभियान शुरू किया। उन्हें स्वयं को पुजवाना नहीं था। **वे चाहते तो आज अन्य कोई स्वरूप नज़र में भी नहीं आते।** सिर्फ 'काकाजी, काकाजी, काकाजी' ही होता रहता। **काकाजी ने आध्यात्मिकता में सर्वदेशीयता की एक नई क्षितिज की दिशा खोली। एकदेशस्थ स्वरूपज्ञान को ट्रान्सेन्ड करके समझाया कि 'स्वरूप' एक ही नहीं होता।** 'भगवान का स्वरूप' यानि – भगवान जिनके अंदर रहें, मानवस्वरूप में ऐसा जो पात्र बने वो 'भगवान का स्वरूप!' मानो मैदान में तलवार खुली रखी है, जो मरज़ी चाहे उठा कर इसे इस्तेमाल कर सकता है। उसे काबू करके तलवार को अपनी कर सकता है। अक्षरपुरुषोत्तम की प्रगट की निष्ठा का ये मर्म घर-घर प्रवर्ताने के लिए व्यापक किया। मैं तो कहता हूँ **यदि काकाजी नहीं होते, तो आज दिल्ली का मंदिर भी नहीं होता। हक़ीक़त में नहीं होता।** पंजाब-यू.पी. वालों पर भी काकाजी ने खूब लुटाया। **अब हम इतना भी कहें कि ओहो काकाजी! तो वे हम पर कितना लुटा देते हैं, उसका हमें ख्याल ही नहीं पड़ता।

*कहा जाता है – 'संत परम हितकारी' हैं। **काकाजी ऐसे संत हैं। इन्होंने बहनों के कारण गालियाँ खाईं, अपमान सहन किया।** महाराज भी सहाय करने हेतु बीच में संतों को विमुख करने का प्रकरण ले आए। यूँ, बहनें इन्टेक्ट रह गई और **'गुणातीत ज्योत'** का पूरा एक निर्माण हर तरीके से पक्का हो गया। हर*

एक को आज स्वीकार्य भी है। **आज कोई ऐसा नहीं पूछता – बहनें भगवा वस्त्र क्यों पहनती हैं ? अब एस्टेब्लिश हो गया है कि जैसे पुरुषों को संन्यास लेकर कल्याण के रास्ते पर चलने का अधिकार है, वैसे ही बहनों को भी है। यह राजमार्ग खुला करने का श्रेय हमेशा के लिए काकाजी के नाम पर ही रहेगा।** बाद में हम सब उसमें जीहज़ूरी करने लग गए। धीरे-धीरे एक डेवलपमेंट हुआ, अलग-अलग सेंटर हुए। लेकिन कोई पूछेगा कि अमेरिका किसने खोजा था ? तो, अब हर कोई कहता है कोलंबस-भले ही इसके बाद रिसर्च हेतु कई आए-गए होंगे। इसी तरह **स्वामिनारायण संप्रदाय में बहनों के लिए भगवान भजने का राजमार्ग किसने खोला था ?** इस प्रश्न का उत्तर है – **पप्पाजी को साथ में लेकर काकाजी ने !**

मानव मात्र जो चाहता है उसे फुलफिल करने के लिए उन्होंने दिशा दी कि 'प्रगट अक्षरपुरुषोत्तम' की उपासना करो। ब्रह्म-परब्रह्म की उपासना करो। इससे इटर्नल सुख, शांति और आनंद प्रगटेगा। यह ऑटोमेटिक प्रोसेस है। पर, ये उपासना करनी पड़ती है। हम अक्षरपुरुषोत्तम के हैं इतना कहने से यह नहीं होता है। **'उपासना' यानि एक आराधना है।** बहुत पहले – हम संस्था से अलग हुए, तब एक मॅगेज़ीन निकाली थी। उसका नाम रखा था – आराधना ! यूँ ये नई आराधना करने हेतु मंदिर बना कर अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना आरंभ की व प्रवर्ताई। आजकल कई लोग यह मंदिर देखने आते हैं तो पूछते हैं कि ये 'अक्षरपुरुषोत्तम' क्या है ? तब गेटमैन बताता है कि अंदर भगवान की मूर्ति है और नीचे हमारे गुरुजी बैठे हैं...

मर्म की बात यह है कि स्थूल, सूक्ष्म और कारण ये तीन शरीर हैं। कारण शरीर का तो हमें पता ही नहीं लगता, पर वो आत्मा के साथ चिपका हुआ है। जब तक कारण शरीर आत्मा के साथ चिपका रहेगा, वो जीवात्मा को जन्म-मरण के चक्कर में डालता रहेगा। उसमें से फ़ारिग करने के लिए **शास्त्रीजी महाराज ने बताया कि जब तक अक्षरपुरुषोत्तम की आराधना नहीं होगी, ब्रह्म-परब्रह्म की भक्ति नहीं होगी, तब तक कारण शरीर आत्मा से अलग हो ही नहीं सकेगा।** हम यह भक्ति करेंगे तो संत कृपा करेंगे और तब विस्फोट होता है। संत के रूप में भगवान की पहचान होने के बाद, कारण शरीर को टालने के लिए वे तुम्हारा ऑपरेशन करेंगे। प्यार-मोहब्बत रूपी एनेस्थीसिया से (अपने साथ) इतना जोड़ देंगे कि आपरेशन का दर्द हमें फील नहीं होगा। **भक्तों व ऐसे संत के साथ आत्मबुद्धि और प्रीति रखनी एनेस्थीसिया के समान है।**

...भगवान के स्वरूप को हम तत्त्व से किस तरह पहचान पाएँगे ? प्रगट अक्षरपुरुषोत्तम की 'उपासना' की बात हम शब्दों में समझे हैं। पर, यहाँ आराधना करनी है, वो समझे नहीं।

...सर्वप्रथम काकाजी ने बताया कि ओहो ! योगीजी महाराज तो भगवान का भव्य स्वरूप हैं। फिर, आत्मबुद्धि-प्रीति से इनसे जुड़े, इनसे संबंध वाले-निष्ठा वाले, इनके निजी माने गये ऐसे सोनाबा, कांतिकाका, काशीबा, डाहीबा (भादरण) के द्वारा धीरे-धीरे एक 'योगी परिवार' की स्थापना हुई।

समाधि के समय गोंडल में काकाजी एक बॉडी समान लेटे हुए थे, मानो उनमें जान ही न हो ऐसा लग रहा था। तनिक भी हिलडुल नहीं रहे थे। तीन दिन के बाद जब जगे और उन्होंने बताया कि मैं तो अक्षरधाम में

जाकर आया हूँ। तो, सभी उत्सुक हो गए कि आपने क्या देखा ? फिर काकाजी तो उस समय क्या बातें करते ! किसी फॉरेनर को देखते तो उसे इंगलिश में समझाने लग जाते। मुझे याद है, कपोळवाड़ी में बापा काकाजी से कहते– दादुभाई, चैतन्य भूमिका की बातें करो। तब काकाजी जो बातें करते थे, उसे सुन कर हमें मज़ा ज़रूर आता था कि 'अच्छी बात करी-अच्छी बात करी', लेकिन पल्ले कुछ नहीं पड़ती थी। व्यक्ति के रूप में तो वे बहुत ही हैंडसम थे ही और उनकी वाणी में भी इतनी आकर्षण शक्ति थी ही। आज सुबह ही कोई बात कर रहा था, तो मैंने कहा कि काकाजी दिन में दो बार शेविंग करते थे। शुरूआत में मैंने भी देखा था कि काकाजी की दाढ़ी एकदम ग्रीन होती थी। इनके पास बैठने का भी मन करता था। उस समय मैं तो कॉलेज में पढ़ता था, पर सुबह, दोपहर और शाम को चार बजे और रात को फिर सात बजे खाना खाने के बाद– यूँ दिन में चार बार पहुँच जाता था। भले समझ कुछ नहीं आता था, लेकिन ऐसा होता कि काकाजी के पास जाना है।

उन्होंने मेइन चीज़ यह समझाई कि अक्षरधाम में जाकर जिस प्रभु को पाना है, वे आज मानव स्वरूप में हमारे पास धरती पर हैं। यह सुन कर हरेक को तब लगता कि क्या नई बात करी ? योगीजी महाराज अच्छे साधु हैं, लेकिन अक्षरधाम में जाकर जिन प्रभु को देखना है, वे ये हैं– यह बात किसी के दिमाग़ में बैठती नहीं थी। पर, काकाजी से हरेक को इतना लगाव था कि उनकी बात सभी को धीरे-धीरे गले उतरती गई। वर्ना, सभी यही कहते थे–

योगीजी महाराज बड़े प्रेमालु-अच्छे हैं। रात को दो बजे जाओ तब भी वे खाना खिला देते हैं। पहले ऐसा उल्टा क्रम चलता था। भगत लोग जो चाहते या कहते, उसके अनुसार बापा करते रहते थे। जबकि **बापा की मर्जी में– वे जो कहें वैसे हमें जीना है, यह नया ट्रैक काकाजी ने तैयार किया।** जो गाड़ी उल्टी दिशा में चल रही थी, उसे यू टर्न दिया। फलस्वरूप सही अर्थ में **'शुद्ध उपासना'** का काम ज़ारी हुआ। **शास्त्रीजी महाराज ने 'शुद्ध उपासना' के लिए मंदिर बनवाया था; लेकिन, सब सही ढंग से समझ कर चल नहीं रहे थे। काकाजी ने शुरूआत करवाई और शास्त्रीजी महाराज के कार्य को सार्थक किया** और अब तो हर जगह यह बात फैल गई है कि प्रगट सत्पुरुष-अक्षरपुरुषोत्तम के स्वरूप के द्वारा ही कल्याण संभव है। वर्ना, सामान्यतः मंदिर में जाकर भले टीका-तिलक करो, फूल, तुलसी या बेलपत्र चढ़ाओ, पर वो हमारा आख़िरी जन्म-प्रकृति का रूपान्तर करके दिव्यता में प्रवेश नहीं करवा पाएगा। ऐसा आज ये पूरा समाज है–जिसे हम 'गुणातीत समाज' कहते हैं। कितनी मार्मिक बात थी... मुझे याद है कि बापा कपोळवाड़ी में शाम को सभा करते थे, थोड़ा बहुत ग्रुप काकाजी के साथ जुड़ा हुआ था। बापा उन्हें कहते–आप यहाँ से दादुभाई के पास जाकर उनकी बातें सुनना। और... रात को 9 बजे के बाद काकाजी के पास पोपटभाई, गोरधनभाई कापड़िया, गोरधन काका, रसिकभाई, हम सब– सारा मंडल काकाजी के पास जाकर बैठता। बापा ने सभा में जो बातें करी हो, उसका मर्म काकाजी समझाते थे। तब जाकर बॅप्स, योगी डिवाईन सोसाईटी, अनुपम मिशन में प्रगट का ज्ञान सही रूप में समझा गया है और सब प्रगति के पथ पर चल रहे हैं...

सत्संग में हम यदि थोड़ा आगे होंगे – बड़प्पन को पाए होंगे, तो हमें कइयों में- सरीखों में भी शॉर्टकमिंग्ज़ नज़र आएँगी या सत्संग के शास्त्र पढ़-पढ़ कर एक आदत पड़ी होगी कि इसको ऐसा ही रहना चाहिए- इसको ऐसा ही वर्तना चाहिए। पर, जैसे हमारी प्रगति होती है, वैसी दूसरों की भी होती होगी ही ही ही। 'सभी प्रगति कर रहे हैं' – क्योंकि प्रगति हमारे कारण नहीं होती, हमारे पीछे महाराज पड़े हुए हैं। सो गुणातीत संत के द्वारा वे करा कर ही छोड़ेंगे। तो, हम दूसरों की दाढ़ी को बुझाने में क्यों लग जाएँ? किसी के प्रति यदि हमारे अंदर ईर्ष्या होगी, तो उसकी बातें हमें चुभती होगी। किसी का बड़प्पन, अच्छी क्वालिटी या कुछ भी चुभता है, तो यही समझना कि हमारे अंदर उसके प्रति ईर्ष्या है। ये जो प्रोसेस चलता है, वह हमें भी पता नहीं लगता है। लेकिन, हम भीतर में देखें कि आज से 5 साल पहले मेरी सोच कैसी थी? आज से 10 साल पहले मैं कैसा था? तब फिर ख्याल आयेगा कि हमें तो पता भी नहीं चला और प्रभु हमें कहाँ से कहाँ ले आये! भगवान के सिवा हर चीज़ छूटती गई है। आख़िर में सिर्फ एक प्रभु रहेंगे।

अभी भी हम ऐसे ही हैं, लेकिन मानसिक अवरोध (माईन्ड की ऑब्सिक्योरिटी) के कारण हमें वो फील नहीं होता है। म्यान के अंदर तलवार खड़कती है, वो हिलाने से पता लगे। उसी प्रकार ***हम अपने दोष-स्वभाव-प्रकृति से अलग हुए होंगे, तो हमें फील होगा कि हम यहाँ गलत हैं। मेरा ये स्वभाव जो मुझे परेशान कर रहा है, वह दूसरों को भी परेशान कर रहा होगा। जैसे मिरर में देखने पर मुंह पर स्पॉट नज़र आता है, इसी तरह भीतर में दिखाई पड़ेगा कि मेरे अंदर ये पड़ा हुआ है। और... संत की स्मृति के साथ भजन करेंगे, तो होमियोपॅथी दवाई की तरह कहाँ पिघल जाएगा, वह पता भी नहीं लगेगा। इसका आसान तरीका यह है भक्तों के अंदर हम सुहृदभाव से डूब जाएँ। सिर्फ चहेतों के साथ नहीं, सभी के साथ।*** *अन्यों को तो यह ज्ञान समझ भी नहीं आएगा कि भीतर में आत्मा और देह खड़कते हैं। दरअसल, उन्हें पता ही नहीं है कि आत्मा क्या है? मानव देहरूप हो गया है...*

ये समाज बापा का है। 'योगी परिवार' से पनपा ये 'गुणातीत समाज' है। *साहेब का कहना यह है कि दूसरी* ***कोई भी साधना करेंगे, तो*** *इसी चक्कर में घूमते रहेंगे।* ***बड़प्पन, हठ, मान, ईर्ष्या छूट नहीं पाएगा। गुणातीत की गोद में बैठ जाएँगे, तो ये चीज़ें सुहृदभाव के अंदर गायब हो जायेंगी!*** *'200 माईल के ऊपर' द्वारा साहेब यह कहना चाहते हैं कि जब तक गुणातीतभाव में न चले जाएँ। इसी की क़वायत देने का ये समाज है। कल किसी ने बात करी कि ऐसे संत-समाज को निर्दोष और दिव्य मानकर इनके अंदर रसबस हो जाएँगे, तो कब अंदर धक्का लग जाएगा उसका पता भी नहीं लगेगा और हम 'गुणातीतभाव' में दाखिल हो जाएँगे... साहेब का कहना यह है कि* ***हमें जिस समाज में रखा है, वो एक सर्कस जैसा लगेगा। पर, हमें चिढ़ना नहीं चाहिए कि ये तो ऐसा है। जिसको जो करना है करे, हमारे लिए जो हित में होगा वो बापा कर ही देंगे,*** *सब एरेंज कर ही देंगे। हम हमारा टाइम इसमें गँवाते हैं कि फलां ऐसा क्यों करता है? काका होते तो कहते कि झक्ख मारने के लिए करता है, तू तेरा कर ना। तुझे आगे जाना है, तो सबको दिव्य मानकर आगे चला जा।*

यह बात प्रगट भगवान के भक्तों के समाज के लिए है। बाहर वालों के लिए तो शिक्षापत्री के अनुसार व्यवहार है। एक बहुत समझने लायक बात है। बापा अपनी पूजा में रोज़ गुलाब का फूल लगाते थे। उसमें से दो फूल गातरिया में बांधे रखते थे। काकाजी ने वो नोट किया कि बापा अपनी पूजा में से दो फूल अलग करके रखते हैं। साधु पूजा में ऐसा कोई चरित्र करता होगा, तो हम ठीक से देखते भी नहीं हैं। पर, काकाजी ने बापा से पूछा–बापा, रोज़ दो फूल निकाल कर किसे देते हैं? तब बापा ने बताया–जो मेरी हर एक क्रिया को पूरे दिन दिव्य मानकर मुझे देखता है, उसे मैं ये फूल देता हूँ। यूँ अंतर की प्रसन्नता का फूल उसे देते थे।

*कहने का मक़सद यह है कि **भगवान को अपने वश में रखने का सीधा-सादा आसान राजमार्ग का तरीका यह है कि उसके संबंध वाले भक्तों के पास दास बनकर झुक जाओ।** आप भी अभी यह बात सुन रहे हैं, लेकिन इसे पकड़ना मुश्किल है। हमें काकाजी को अपने वश-काबू में कर ले लेना है तो ये तरीके अजमाएँ। यह बात दिमाग़ में बैठ जाएगी, तो फिर वर्तन में आएगी। यह बात हम पकड़ पाएँ, इसका दूसरा आसान तरीका है कि हम सुहृदस्वामी और आनंदी दीदी वगैरह जैसों के कहने पर चला करें। वे गाइड करते रहेंगे कि इस रास्ते पर मत जाओ, यह ठीक नहीं है। डाँट कर भी वापिस ले आएँगे। ऐसा भी होता होगा कि गुरुजी किसी से बात कर रहे हैं, तो दो सी.आई.डी. रखें और जानें कि क्या बात कर रहे हैं? ज़रा देखें कि कहीं मेरे बारे में तो बात नहीं हो रही है। यह आदत हमें अनंत जन्म से पड़ गई है। **हमें प्रश्न होता है कि हम इतनी सेवा करते हैं, मगर हमें आत्मबुद्धि क्यों नहीं होती? हम सेवा करते हैं, लेकिन साथ में दूसरों की झंझट में भी चले जाते हैं। सो इस रास्ते पर न चलें...***

सभा के पश्चात् सभी ने आमरस का प्रसाद लिया। अगले दिन **13 जून, भीम एकादशी–स्कूल सर्टीफिकेट** के अनुसार **प.पू. गुरुजी** का **प्राकट्य दिन** था। सो, **पू. राकेशभाई** एवं **पू. समीरभाई दवे** ने माहात्म्य दर्शन कराया। संजोग से गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी के सोपानों में प.पू. ज्योति बहन हाज़िर नहीं हो पाई थीं। 2017 दिसंबर में जब गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी का पर्व दिल्ली में मनाया गया, तब प.पू. ज्योति बहन की तबियत तो बहुत ही नासाज़ थी। पर, प.पू. गुरुजी के प्रति एक अद्‌भुत लगाव के वश उनकी आंतरिक इच्छा थी कि मुझे अबकी बार दिल्ली तो जाना ही है। साथ ही भक्तों की भी इनके दर्शन करने की इच्छा थी। सो, संकल्पशक्ति से अपनी तबियत को ठीक करके, वे एक सप्ताह के लिए दिल्ली आ ही गईं। सभी को अपने दर्शन, सेवा और समागम का लाभ दिया और... 14 जनवरी 2018 को तो उन्होंने अपनी जीवन लीला समेट ली ! गुरुहरि काकाजी महाराज के प्राकट्य दिन निमित्त गुणातीत ज्योत की बहनों ने **प.पू. ज्योति बहन** द्वारा काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी के समय किए गए महिमागान का निम्न ऑडियो भेजा था, सो उसका सभी ने लाभ लिया–

...तुम यदि प्रथम प्रभु को आगे रख कर, फिर कदम उठाओगे, तो भगवान हमारी रक्षा में हैं, हैं और हैं ही। इसलिए पीछे हट करना नहीं, हिम्मत हारना नहीं। गलत विचार करने नहीं और नकारात्मक विचारों में बहना

नहीं। क़ैफ में रहना। ***काकाजी को कैसा क़ैफ था कि 'किसकी घरवाली हूँ...'*** *उसी क़ैफ में काकाजी निमग्न रहते थे। धोती का किनारा पकड़ कर, मस्ती से चलते हुए कहते–मैं किसकी घरवाली हूँ! तो, हम तो उनके शिष्य हैं, सो हम इतना क़ैफ तो रखें। उन लोगों ने मान-अपमान, सुख-दुःख की हर स्थिति में भगवान का आश्रय लिया। काकाजी-पप्पाजी पर चौबीस लाख का केस हुआ। शाम के अखबार में आया, तब मानो किसी दूसरे के बारे में आया हो, यूँ 6/डी के फ्लैट की रसोई में आकर उन्होंने मुझसे कहा– ज्योति, देख यह शाम के अखबार में खबर आई है। मैंने पढ़ा– 'फोर डायरेक्टर्स आर एरेस्टेड।' मुझे हुआ कि कोई अन्य होगा, लेकिन नाम पढ़ा तो काका, पप्पा, कांतिकाका और रानाडे। इन चारों के नाम थे। काकाजी बोले–देखो, हम अखबार में कैसे मशहूर हो गए! यह उनका क़ैफ था। विचार करें कि वे भगवान को कर्ता-हर्ता मानते थे, तो आग जैसी दुःख की घड़ी में भी निश्चिंत रहे। मानो एक बाप ने अपने दो लड़कों में से एक को गद्दी सौंपी और दूसरे से कहा कि तू खाली हाथ जा। पर, उसने प्रभु के रास्ते पर चलते हुए ब्रह्मांड डोला दिया! कितने ब्रह्मांड खड़े कर दिए!! हम विचार करें–हरिप्रसादस्वामीजी, गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, साहेबजी, दिनकरभाई जैसे कितने ब्रह्मांड खड़े किए! इन सबने क्या किया ? तो, उनके पास जो भगवान थे, उन्हें प्रत्यक्ष करके अपना बनाया। उसका क़ैफ और मस्ती अलग ही होगी न!*

हम मंदिर में आते हैं। यहाँ जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म और परब्रह्म– पाँचों तत्त्व देखने को मिलते हैं। पसंद-नापसंद भी मिलता है। कोई अपमान करने वाला और बैठे हुए को उठाने वाले भी मिलते हैं। तब भी ऐसा होना चाहिए कि अहोहो! भगतजी महाराज को तो सामने परोसी हुई थाली से कई बार उठाया था। फिर भी उन्हें कभी भी अपमान नहीं लगा। यूँ, हमें ऐसा क़ैफ रखना चाहिए कि हम भगवान के ऐसे राज में रह रहे हैं।

काकाजी-पप्पाजी का शताब्दी पर्व मनाना है, वो हम किस प्रकार मना सकते हैं? लोगों को इकट्ठे करके मनाएँगे ? नहीं, शताब्दी पर्व के दौरान ***हम ऐसे बन जाएँ कि मेरा संकल्प और बल ऐसा होना चाहिए कि त्रिकाल में कैसे भी प्रसंग पर मेरे हृदय की ठंडक न जाए और मेरा क़ैफ कम न हो।*** *तभी हमने सच्ची जन्मजयंती मनाई। काकाजी-पप्पाजी को यह क़ैफ था कि योगीजी महाराज के रूप में जो भगवान पृथ्वी पर आए, उन्हें किस प्रकार पहचान लें! काकाजी-पप्पाजी कहते– एक जीप कार में बैठ कर, बेलन से थाली को बजा कर ढिंढोरा पीटेंगे कि 'जोगी भगवान है, जोगी भगवान है।' उन्हें कैसा क़ैफ था। लोग तो बापा से पूछते– दादुभाई के सिर पर चौबीस लाख का केस है और उन्हें अफ्रीका ले जा रहे हैं? ये क्या 'सत्संग' प्रवर्ताएँगे ? लोग अभाव लेंगे।* ***बापा को ख्याल था कि दादुभाई ही मेरा गुणगान गाएँगे और मेरी पहचान कराएँगे।*** *सब शास्त्रीजी महाराज को याद करा करते थे और* ***काकाजी ने सब जगह जोगी-जोगी-जोगी की रट लगवा दी।*** *यह किसने लगवाई –दादुभाई ने!*

प्राकट्य पर्व के अंत में **पू. प्रकाशभाई ठक्कर** ने सभी की भावनाएँ प्रकट करते हुए **प.पू. गुरुजी** को हार अर्पण किया और... प्रसाद लेकर सभी तृप्त हुए। यूँ, पूरे एक महीने की दिव्य स्मृतियाँ सभी ने अपने भीतर में संजोईं।

गुणातीत समाज का गौरव...

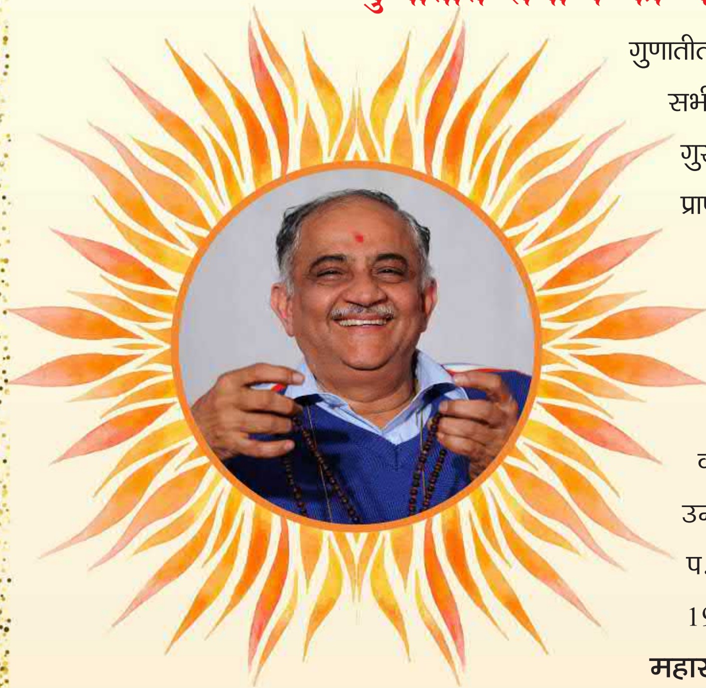

गुणातीत समाज में, यह तो हम सभी जानते हैं कि सभी के प्रिय **परम पूज्य वशीभाई** ब्रह्मस्वरूप गुरुहरि काकाजी की प्रसन्नता एवं कृपा के प्राप्त संत हैं – 'योगेश्वर' हैं। लेकिन, शायद बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि वे एक **'कर्मयोगी चार्टर्ड अकाउंटन्ट'** भी हैं। जगत में देखें तो सी.ए. और संत का समन्वय अद्वितीय-असाधारण है। परंतु, काकाजी महाराज के आशीर्वाद से और उनकी कैसी दूरदृष्टि होगी कि यह कमाल प.पू. वशीभाई ने कर दिखाया।

1970 के दशक में **गुरुहरि काकाजी महाराज** ने प.पू. वशीभाई से ताड़देव-6/डी, सोनावाला बिल्डिंग में कहा था –

तुम यहाँ सी.ए. की पढ़ाई करके बड़े अफसर बनो और दूसरी ओर रोज़ महापूजा करना सीख जाओ।

ताड़देव में तो भक्तों का तांता लगा रहता था और गुरुहरि काकाजी के सान्निध्य में लगातार कथावार्ता-धुन चलती रहती थी। सी.ए. के अध्ययन के लिए एकाग्रता खूब ज़रूरी है। फिर भी, ऐसे माहौल में गुरुहरि काकाजी के बल से प.पू. वशीभाई ने दोनों आशीर्वाद आत्मसात् किये। महापूजा करनी भी ऐसे भाव से सीखी कि सभी को एहसास होता है कि श्रीजी महाराज सहित सभी स्वरूप इनकी महापूजा में साक्षात् हाज़िर हो जाते हैं और सी.ए. बन कर मल्टीनेशनल 'मॅसो' कंपनी में डायरेक्टर के रूप में 35 साल से सेवारत हैं। साथ ही गुरुहरि काकाजी की मरज़ी के अनुसार एक संत का जीवन जीते हुए **सच्चे निष्काम कर्मयोगी** बन कर स्वधर्म का पालन कर रहे हैं।

भगवा वस्त्र भी न धारण करते हुए, 'हृदय को भगवा' करके समाज में हर वर्ग के लोगों का श्रेय कर रहे हैं। गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी ने ऐसे संत को 'नेकटाई साधु' नाम दिया था।

कुछ समय पहले ही प्रसिद्ध चार्टर्ड अकाउंटन्ट **श्री शैलेश घेडियाजी**, जो कि पंजाब एण्ड सिंध बैंक के डायरेक्टर हैं और एक पॉलीटिकल मंच से जुड़ कर समाज सेवा कर रहे हैं, वे प.पू. वशीभाई के संपर्क में आए। प.पू. वशीभाई की जीवनशैली को देख कर वे इतना प्रभावित हुए कि सी.ए. इंस्टीट्यूट के पदाधिकारियों – जो कि प.पू. वशीभाई से परिचित भी नहीं थे, उन्हें उनके बारे में विस्तारपूर्वक बताया कि किस प्रकार प.पू. वशीभाई सी.ए. प्रोफेशन में इतनी ऊँचाईयों पर पहुँचने के साथ-साथ एक संत का जीवन जीते हुए आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर हैं।

सो, सी.ए. इंस्टीट्यूट की कमीटी ने प.पू. वशीभाई को सम्मानित करने का प्रस्ताव पारित किया और... 1 जुलाई 2019, सोमवार को मुंबई के सुप्रसिद्ध **'रविन्द्र नाट्य मंदिर'** में, इंस्टीट्यूट के स्थापना दिन की 70वीं सालगिरह – प्लॅटिनम ज्युबली के महत्त्वपूर्ण अवसर पर, सी.ए. इंस्टीट्यूट की **'वेस्टर्न इंडिया रीजनल काउंसिल'** की चेयर पर्सन सी.ए. **श्रीमती प्रीति साबला** द्वारा अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में, गुरुहरि काकाजी के 'बचूड़िये' और हम सभी के प्यारे प.पू. वशीभाई को 'अति उत्कृष्ट सेवा पुरस्कार' देकर सम्मानित किया। **गुणातीत समाज के लिए यह अत्यंत गौरव एवं हर्ष का विषय है।**

यहाँ एक बात और आकर्षित करती है कि निमंत्रण पत्र पर उन्हें **'पूज्य सी.ए. हेमंतभाई वशी'** नाम से संबोधित किया है। जगत का कार्य करते हुए भी प.पू. वशीभाई ने अपनी साधुता से गुरुहरि काकाजी की कैसी शोभा बढ़ाई है !

प.पू. गुरुजी के कहे अनुसार निष्काम कर्मयोगी बन कर जगत में गुरुहरि काकाजी का वे अद्भुत परिचय बने हैं। कई कंपनियों में निदेशक के पद पर कई सेवाभावी संस्थाओं में ट्रस्टी और सलाहकार होने के बावजूद, अपनी क़ाबिलियत का तनिक भी प्रदर्शन किए बिना प्रभु की मस्ती में रहते, प.पू. वशीभाई अपने संबंध में आए मुक्तों के व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। सच, यह प.पू. वशीभाई की गुरुहरि काकाजी के प्रति अप्रतिम भक्ति ही कही जाए। गुरुहरि काकाजी अंतर से खूब राज़ी हुए होंगे ही क्योंकि –

सहज सरल बर्ताव है वशीभाई का, स्टेटस का नहीं मान,
काकाजी की खुश्बू बन कर, जीना ही अरमान...

अलविदा पू. ज्ञानस्वरूपस्वामीजी...

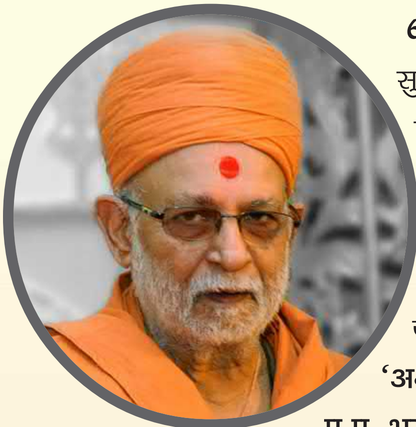

6 जुलाई 2019 को **प.पू. वशीभाई** के **प्राकट्य दिन** निमित्त सुबह की फ्लाईट से **प.पू. गुरुजी** करीब 36 मुक्तों के साथ मुंबई, पहले तो पू. अनिलभाई सेठ के घर पहुँचे और सायं सरप्राईज़ में पवई मंदिर जाकर सभी को खुश कर दिया।

प.पू. वशीभाई के प्राकट्योत्सव के बीच ही खबर आई कि समढियाळा में प.पू. निर्मलस्वामीजी की निश्रा में रहते, उनकी जोड़ के संत **पू. ज्ञानस्वरूपस्वामीजी** अभी-अभी यानि 7:30 बजे **'अक्षरधाम' सिधारे** हैं। उनके प्रति **श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प.पू. भरतभाई ने** उपस्थित मुक्तों के संग **पाँच मिनिट धुन कराई।**

अगले दिन **7 जुलाई** की सुबह नौ बजे **'हरिधाम'** में **पू. शास्त्रीस्वामीजी** व सभी वड़ील संतगण और अंबरीषों की विराट उपस्थिति में उनकी अंत्येष्टि संपन्न होनी थी, सो पवई से **प.पू. भरतभाई, पू. अश्विनभाई, पू. विराटभाई (शिकागो), पू. परेशभाई परमार एवं कुछ अन्य भक्त, गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा दीक्षित 51 संतों में से एक ऐसे पू. ज्ञानस्वरूपस्वामीजी के अंतिम दर्शन हेतु पहुँच ही गए और प.पू. बापा के संबंध के माहात्म्य का दर्शन कराया।**

पूर्वाश्रम में 'वासुदेव अमीन' नाम के **पू. ज्ञानस्वरूपस्वामीजी**, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के वचन से गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी के संग कंधे से कंधा मिला कर, 'गुणातीत समाज' की नींव में याहोम होने वाली **प.पू. सोनाबा के पौत्र थे।** सो, जन्म से ही सत्संग के संस्कार उन्हें मिले थे। **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** ने आशीर्वाद दिया था– *यह बेटा गोंडल की सेवा के लिए महाराज ने दिया है।* **प.पू. कांतिकाका-पू. ललिताबा के ये ज्येष्ठ पुत्र** जो कि **पू. माधवस्वामीजी (हरिधाम), पू. घनश्यामभाई अमीन, गुणातीत ज्योत में भगवान भजती पू. धर्मिष्ठा बहन, पू. साधना बहन और पू. भावना बहन के ज्येष्ठ भ्राता** थे, वे युवास्था में ही गुरुहरि योगीजी महाराज के जोग में आए। **गुरुहरि योगीजी महाराज और संतगण जब मुंबई पधारते, तब प.पू. सोनाबा के घर ठहरते** और वे पू. वासुदेव को अपने साथ सेवा में रखते। पू. वासुदेव भी महिमा से संतों की सेवा करते। युवकों को अपना हृदय मानते प.पू. बापा ने अपने निश्चल प्रेम में सभी को सराबोर करके ख़ुद से अतिशय प्रीति करा दी थी। सो, प.पू. बापा से प्रीतिपूर्वक जुड़े प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी एवं पू. माधवचरणस्वामीजी के साथ वे अपनी आंतरिक इच्छा न होने के बावजूद साधु बनने के लिए तैयार हो गए। प्रथम 51 शिक्षित युवकों के समूह में अपना नंबर लगा कर, गुरुहरि योगीजी महाराज की प्राकट्य तिथि के मंगलकारी दिन 11 मई 1961 को प.पू. बापा के वरद् हस्तों से भागवती दीक्षा प्राप्त करके जीवन की नई दिशा में अग्रसर भी हुए।

प.पू. बापा ने उन्हें **प.पू. निर्मलस्वामीजी** के साथ ही गोंडल मंदिर में पूजारी के रूप में नियुक्त किया। साथ ही प.पू. बापा ने उन्हें प.पू. निर्मलस्वामीजी की जोड़ बनाया और तब से आख़िर तक वे निरंतर प.पू. निर्मलस्वामीजी के साथ ही रहे। बॅप्स संस्था से अलग होने के बाद कई उतार-चढ़ाव आए, लेकिन गुरुहरि काकाजी महाराज के आशीर्वाद एवं हूँफ से **प.पू. निर्मलस्वामीजी, पू. माधवचरणस्वामीजी**

एवं पू. ज्ञानस्वरूपस्वामीजी आपस-आपस में पूरक बन कर रहे और... गुरुहरि काकाजी महाराज द्वारा स्थापित 'समढियाला मंदिर' में रह कर भजन-भक्ति व सत्संग द्वारा संपर्क में आए मुक्तों की सेवा करते रहे और प.पू. हरिप्रसादस्वामजी के रूप में प.पू. बापा को सदैव प्रत्यक्ष मान कर जिए हैं।

पिछले वर्ष 20 जुलाई को पू. माधवचरणस्वामीजी अक्षरनिवासी हुए, तत्पश्चात् काफ़ी समय से पू. ज्ञानस्वरूपस्वामीजी की तबियत नासाज़ रही और 6 जुलाई 2019 को वे भगवान स्वामिनारायण के श्रीचरणों में विराजित हो गए। पू. निर्मलस्वामीजी एवं पूरे सत्संग समाज के लिए यह भारी क्षति कही जाए। **पू. ज्ञानस्वरूपस्वामीजी** ने मौन रह कर, कोई भी फरियाद करे बिना जो छुपी सेवा-समर्पण किया, वह सभी के लिए आदर्श है और अपने नाम 'ज्ञानस्वरूप' को उन्होंने सार्थक किया है। उनकी निष्ठा, धीरज व समझदारी जैसे **दैवी गुणों द्वारा** वे **हमेशा हमारे बीच चिरंजीव रहेंगे।**

चातुर्मास दौरान

[यानि दिनांक 12 जुलाई, शुक्रवार (देवशयनी एकादशी) से 8 नवंबर, 2019 शुक्रवार (प्रबोधिनी एकादशी) तक]

भगवान और संत की प्रसन्नता हेतु सभी सत्संगी निम्न नियमों का पालन करें।

1. सावन के महीने यानि– **17 जुलाई, बुधवार** से **30 अगस्त, शुक्रवार** तक एक बारी भोजन लें।
2. **चातुर्मास दौरान हर महीने** या **सिर्फ सावन के महीने में–**
   मंदिर के स्टाफ यानि 60 जनों के लिए एक दिन टिफिन या कॅश द्वारा रसोई की सेवा दें।
3. **12 जुलाई, शुक्रवार** - नियम की एकादशी, **24 अगस्त, शनिवार** - जन्माष्टमी
   9 सितंबर, सोमवार - जलझीलनी एकादशी, **8 नवंबर, शुक्रवार** - कार्तिक शुक्ला एकादशी
   इन चारों दिन व्रत रखें।
4. चातुर्मास दौरान यथाशक्ति 'महापूजा' करवाएं।
5. रोज़ सुबह या सायं **'स्वामिनारायण महामंत्र'** का अजपाजप करते हुए **बीस मिनिट वॉकिंग** और
   पंद्रह मिनिट कपालभाँति, अनुलोम-विलोम, भस्त्रिका **प्राणायाम** करें।
6. चातुर्मास दौरान हमारे हिन्दी प्रकाशन 'मंत्रशक्ति' पुस्तक का पारायण करते हुए उन बातों पर मनन –चिंतन करें।
7. सावन महीने के दौरान–
   (अ) 'बॅप्स' द्वारा प्रकाशित **'भगवान श्री स्वामिनारायण एक दिव्यजीवन गाथा'** के तीन पन्नों का नित्य पठन करते हुए पारायण करें।
   (ब) 'गुजराती' भाषा जानते हों, वे **'स्वामी की बातें'** या हिन्दीभाषी मुक्त **'उपदेशामृत'** की पारायण करें।
   (क) **'भगवत् कृपा'** के पिछले अंकों में आई संतों-मुक्तों की ज्ञानवार्ता का क्रमशः नियमित रूप से रोज़ पाठ करते हुए उस पर मनन-चिंतन करें।

❋ विशेष नियम ❋

दिल्ली मंदिर का 'रजत जयंती वर्ष' चल रहा है,
सो, मंदिर से जुड़े परिवार यथाशक्ति चाँदी (यानि रजत) मंदिर को दान में दें।

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 28.7.'19, रविवार – एकादशी – व्रत

(2) दि. 11.8.'19, मंगलवार – पवित्रा एकादशी – व्रत *(ठाकुरजी को रेशम के हार पहनाने।)*

(3) दि. 15.8.'19, गुरुवार – भारत स्वातंत्र्य दिन श्रावणी पूर्णिमा – रक्षाबंधन (राखी)

(सुबह 9 : 00 से 10:30 प.पू. गुरुजी से शाश्वत् रक्षाकवच प्राप्त करने के लिए महापूजा-प्रार्थना करेंगे।)

(4) दि. 17.8.'19, शनिवार – हिंडोला (झूला) समाप्त

(5) दि. 20.8.'19, मंगलवार – नागपंचमी

(6) दि. 21.8.'19, बुधवार – रांधण छठ (षष्ठी)

(7) दि. 22.8.'19, गुरुवार – शीतला सातम (सप्तमी)

(8) दि.24.8.'19, शनिवार – जन्माष्टमी – व्रत

(9) दि. 27.8.'19, मंगलवार – एकादशी – व्रत

(10) दि. 30.8.'19, शुक्रवार – श्रावण मास – समाप्त

(11) दि. 1.9.'19, रविवार – गुरुहरि पप्पाजी महाराज का प्राकट्य दिन

(12) दि. 2.9.'19, सोमवार – गणेश चतुर्थी

(13) दि. 9.9.'19, सोमवार – जलझीलनी एकादशी – व्रत

(14) दि. 10.9.'19, मंगलवार – वामन जयंती

(15) दि. 12.9.'19, गुरुवार – अनंत चतुर्दशी (आनंद चौदस)

(16) दि. 14.9.'19, शनिवार – ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का स्मृति पर्व

(17) दि. 18.9.'19, बुधवार – गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का स्मृति पर्व

(18) दि. 23.9.'19, सोमवार – प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामिजी की प्राकट्य तिथि

(19) दि. 24.9.'19, मंगलवार – भगवान स्वामिनारायण एवं
ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का स्मृति पर्व

(20) दि. 25.9.'19, बुधवार – एकादशी – व्रत, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी,
गुरुवर्य योगीजी महाराज एवं गुरुहरि काकाजी महाराज का स्मृति पर्व
(प्रसाद सायं 7:30 बजे लेंगे।)

(21) दि. 26.9.'19, गुरुवार – ब्रह्मस्वरूप प्रागजी भक्त का स्मृति पर्व

(22) दि. 29.9.'19, रविवार – नवरात्रे प्रारंभ

(23) दि.8.10.'19, मंगलवार– दशहरा (प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन)

(24) दि. 9.10.'19, बुधवार – एकादशी – व्रत

**(25) दि.13.10.'19, रविवार – शरदपूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्राकट्य दिन
प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन
प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि**

12 जून 2019 – गुरुहरि काकाजी महाराज की 101वीं जयंती

13 जून 2019 – स्कूल सर्टीफिकेट के अनुसार
प.पू. गुरुजी का प्राकट्योत्सव

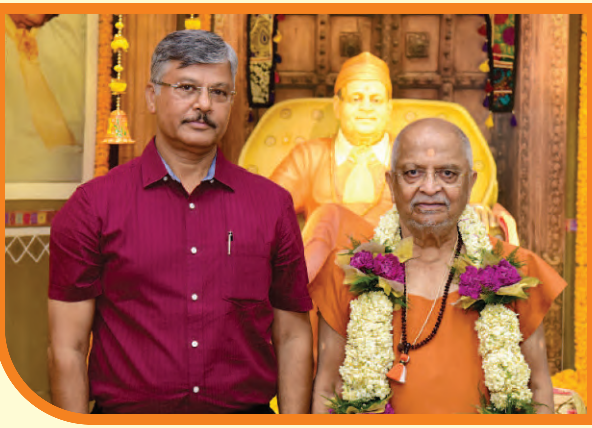

Air Mail **R.N.I. 28971/ 77**

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :-*

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kãkãji Lane, Swãminãrãyan Mãrg, Ashok Vihãr-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052